वर्ष 38 अंक : 5 16.10.2015 शुक्रवार (सितंबर-अक्तूबर) वार्षिक शुल्क : ₹111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

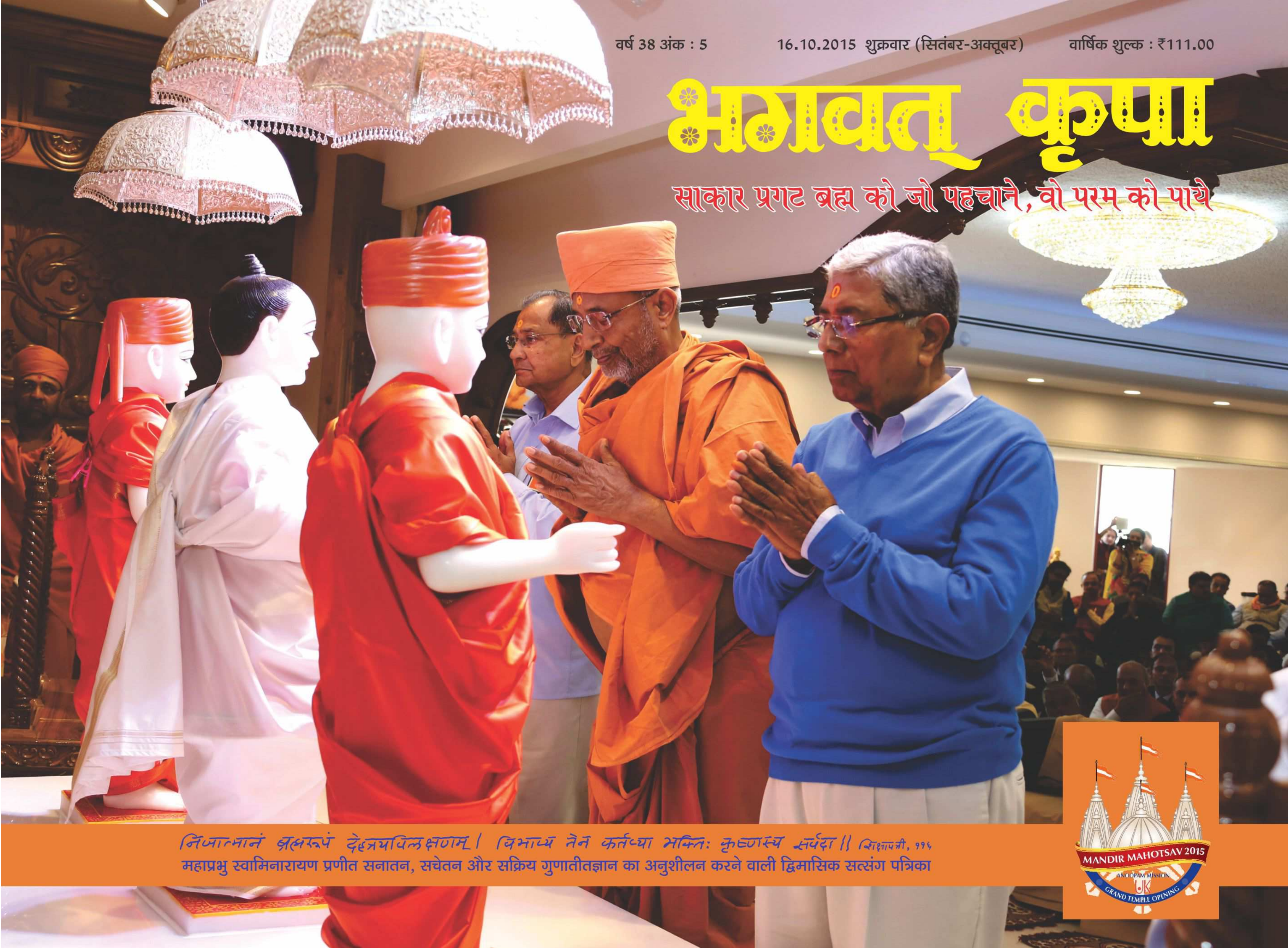

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

►
1954 में
प.पू. योगीबापा की
आज्ञा से
पहली बार विदेश में
सत्संग के पलेव
के लिए
विदेश जाते हुए
प.पू. काकाजी –
स्टीमर की डे'क पर!

◄
प.पू. साहेबजी
1973 में
पहली बार –
प.पू. काकाजी
के साथ
यू.के. की कल्याण
यात्रा पर!

प्रभुभक्ति - गुरुभक्ति में हमें रंगने आए दिव्य पर्वों का स्वागतम्!

'उत्सव' मानव संस्कृति का अलंकार हैं। उनके समावेश से मानवजीवन हमेशा महकता रहता है। चूँकि जीवमात्र बदलाव की इच्छा रखता है, जगत की दृष्टि से, 'उत्सवों' का आगमन जीवन में उमंग-उत्साह भरता है। ऐसे चहकते माहौल में जीव आनंद ढूँढने की कोशिश करता है। दरअसल, **उत्सव एक-दूसरे को आपस में नज़दीक लाने का एवं परस्पर सहयोग एवं सद्भाव बढ़ाने वाला सेतु है।** सामान्यतः व्यावहारिक दृष्टि से युक्त मनुष्य अधिक धन, बंगला-कोठी (शान-शौकत), अच्छी नौकरी या व्यवसाय, महंगी गाड़ी जैसी भौतिक रिद्धि-सिद्धि को अपना बड़प्पन-समृद्धि मानकर, खुद को अन्यों से श्रेष्ठ मानता है। पर, उसे सच्चे सुख, शांति व आनंद का क़तई ख्याल ही नहीं है। यदि ऐसे झूठे बड़प्पन, शॉ-शा से ऊपर उठ कर, मेरा-तेरा की सीमाओं के बंधन से मुक्त होकर जीने लगे, तो जीवन ही एक 'उत्सव' बन जाए! और... इन सभी **बंधनों से केवल सच्चे संत ही मुक्त करवा सकते हैं...** सच्चे संत ही हर विपरीत परिस्थिति, प्रत्येक प्रसंग पर सच्चा समाधान देकर सच्चे सुख का अनुभव करवा सकते हैं। सो, मनुष्यमात्र का **असली धन-समृद्धि वास्तव में तो भगवान और उनको अखंड धारे संत ही हैं।**

भगवान स्वामिनारायण स्वयं अत्यंत 'उत्सवप्रिय' थे। उन्होंने कहा है– ***'व्यवहार से सुखी होने व आध्यात्मिक समृद्धि बढ़ाने के लिए 'संतप्रधान' जीवन जीना जरूरी है।'***

प्रगट के उपासक - अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले साधक - मुक्त यदि अपने गुरु के अभिप्राय - अनुवृत्ति के अनुरूप जीवन जीने के लिए तत्पर हों, तो वे 'उत्सव' में छिपे आध्यात्मिक रहस्य को समझ कर, शाश्वत् आनंद पाकर जीवन को उत्सवमय बना सकते हैं।

अतः अपने जीव का भला करने हेतु, भगवान स्वामिनारायण, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप काकाजी - पप्पाजी एवं प्रत्यक्ष स्वरूपों के जीवन प्रसंगों की जुगाली करते हुए, भजन व प्रार्थना का बल लेकर, उनकी प्रसन्नतार्थ जीवन जीने का ध्येय बनाएँगे, तो प्रगट प्रभु के पनौते पुत्र बनने में देर नहीं लगेगी। सो, आगामी पर्वों निमित्त अंतर से प्रार्थना करें।

विजय का प्रतीक 'दशहरा'

आध्यात्मिक इतिहास साक्षी है कि 'दशहरा' यानि आसुरी तत्त्वों पर दैवी तत्त्वों की विजय... अहंकार एवं दबदबा पर सरलता की विजय! नकारात्मक सोच हमेशा सकारात्मक भाव पर हावी होने की चेष्टा करती है। लेकिन, शुभ व सत्य स्वरूप के आगे अशुभ भाव टिक नहीं सकता और... रावण का संहार करके, सत्य की विजय पताका लहराने के लिए भगवान श्री राम ने 'दशहरा' का दिन चुना। गुणातीत समाज के इतिहास में 'दशहरा' का दिन सुनहरा बनाने हेतु गुरुहरि योगीजी महाराज ने **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** को इसी मंगलकारी दिन **पार्षदी दीक्षा** दी और... मुक्तों ने अपने प्रकृति-स्वभाव के जड़बंधनों से मुक्त होकर, दिव्यता के मार्ग पर अग्रसर होने का मार्ग पाया। हमारे जीवन का परम सौभाग्य है कि इस वर्ष प.पू. स्वामिजी को दीक्षा लिए पचास वर्ष पूर्ण हो रहे हैं।

जीवन में संत की अनिवार्यता को बताते हुए **प.पू. स्वामिजी** अकसर कहते हैं–

'श्री रामचंद्रजी के उपासक को हनुमानजी, श्रीकृष्ण के उपासक को शुकदेवजी, महादेव के उपासक को गणेशजी जैसे संत की आवश्यकता है ही। भगवान स्वामिनारायण के उपासक को गुणातीतानंदस्वामिजी, गोपाळानंदस्वामिजी जैसे संत की गोद में बैठ जाना चाहिए और... श्रेयार्थी साधकों पर अत्यंत करुणा करके, इन्होंने ऐसे ब्रह्मस्वरूप संतों की परंपरा यावच्चन्द्रदिवाकर अक्षुण्ण रखी।'

प.पू. स्वामिजी के उपरोक्त कथनानुसार, यदि हम, विभूति पुरुषों – प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई – की मरजी में जीवन जीते हो जाएँ, तो हर प्रकार से विजयी हो ही जाएँगे। हम सभी इस दिशा में अग्रसर हों, ऐसी **'स्वर्ण दीक्षा महोत्सव'** की मंगल वेला पर अंतर से प्रार्थना...

शीतलता की प्रतीक 'शरदपूर्णिमा'

संसारचक्र के त्रिविध ताप में तपते मुमुक्षुओं को शाश्वत् शीतलता प्रदान करने हेतु ही आज के दिन **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रगटीकरण** हुआ। और... शरद के चाँद की चाँदनी भी दिव्य हो गई ! ऐसे सामर्थ्यवान, अध्यात्म धरोहर से परिपूर्ण और साधुता की मिसाल मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के व्यक्तित्व का वर्णन करना या उनके मूल स्वरूप को चर्मचक्षु से देख पाना संभव ही नहीं था। पर, **भगवान स्वामिनारायण** की अनहद् कृपा कही जाए कि समय-समय पर उन्होंने स्वयं ही मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के छुपे स्वरूप का दर्शन कराया।

- मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी जब छोटे बालक ही थे, तब सवंत 1859 में **श्रीजी महाराज** उनके घर **भादरा** गए और यकायक उनकी माता से बोले–
  'तुम्हारा यह पुत्र मूलजी तो हमारे रहने का अक्षरधाम है। वेद-वेदांत आदि सगुण-निर्गुणरूप से तुम्हारे पुत्र का गान करते हैं। तुम्हारे गर्भ में वे नहीं आए थे तब भी, और फिर गर्भ में आए तब भी व अभी भी हमारी मूर्ति को अखंड देखते हैं; ऐसे ये बहुत समर्थ हैं।'
- **सारंगपुर** में राठोड धांधल के घर जब हुताशनी का उत्सव हुआ, तब सद्. आनंदस्वामी, सद्. मुक्तानंदस्वामी, सद्. स्वरूपानंदस्वामी, सद्. रामदासस्वामी, सद्. निष्कुळानंदस्वामी और मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी इत्यादि श्रीजी महाराज के साथ थे; तब **श्रीजी महाराज** ने स्वयं कबीरजी का दोहा बोला :
  'कोटि कृष्ण जोड़ें हाथ, कोटि विष्णु नमे नाथ, कोटि ब्रह्मा कथे ज्ञान, कोटि शिव धरे ध्यान,
  हो सद्गुरु खेले वसंत।'
  और फिर... सहजता से श्रीजी महाराज ने बताया – *'ऐसे सद्गुरु अक्षरमूर्ति ये गुणातीतानंदस्वामी हैं।'*
- एक बार **श्रीजी महाराज** ने सद्. मुक्तानंदस्वामी से पूछा– *'इस साधु को पहचानते हो?'*
  उत्तर में सद्. मुक्तानंदस्वामी ने अपनी समझ से मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के गुण बताए। तब **श्रीजी महाराज** ने कहा– *'यह तो सामान्य विशेषता बताई। लेकिन, उनका विशेष बड़प्पन तो यह है कि* ***जैसे संडासी में सांप को कस कर कोई पकड़े रखता है, उसी प्रकार तीनों अवस्थाओं – जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति में इन्होंने हमारी मूर्ति को अखंड पकड़े रखा है*** *और आज जितने लोग हमारे इर्द-गिर्द घूमते हैं, उतने ही उनके पीछे घूमेंगे। ये सबसे श्रेष्ठ हैं और सभी इनका समागम करें – ऐसे योग्य हैं; वे इतने बड़े हैं।'*

ऐसे संपूर्ण पुरुष होने के बावजूद भी **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने श्रीजी महाराज के अस्तित्व से ही अपना अस्तित्व माना।** उनकी अपनी कोई पहचान बने, ऐसा संकल्प तक उनके मन में नहीं उठा। यही कारण था कि **जीवन की अंतिम श्वास तक वे सखा, गुरु, सद्‌गुरु या गुरुहरि बन कर नहीं, बल्कि सेवक की भाँति जिए।** हर एक में केवल श्रीजी महाराज को ही निहारते हुए उन्होंने यही संदेश दिया कि ***बड़प्पन 'छोटा' बन कर रहने में है...*** तो, उनके द्वारा बताए गए सदा सुखी रहने के इस साधन को आज़मा कर हम परमानंद प्राप्त करने की राह पर अग्रसर हों।

साधुता की साकार मूर्ति की प्राकट्य तिथि पर उनके तद्‌वद्‌भाव को पाई अन्य दो 'विभूतियों' के प्रसंग भी ग़ौरतलब हैं...

गुणातीत समाज के सिरछत्र प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन!

एक बार नायगरा प्रपात पर **प.पू. स्वामिजी** ने सत्संग की गरिमा बताते हुए कहा–

'घर के सभी पात्र प्रभु के हैं, ऐसा हरेक व्यक्ति माने और घर के सभी सदस्य एक साथ प्रभु के बल से दौड़े व एक-दूजे की प्रभु के भाव से सेवा करें, तो उस घर में महाराज 'अक्षरधाम' जरूर प्रगटा देंगे।'

पूर्वाश्रम में प.पू. स्वामिजी ने स्वयं ऐसा जीवन जिया होगा, इस बात का इस कथन से दर्शन हो जाता है। तभी तो, ***'गुरु गुणातीत की भाँति आज हम प्रभुदास को भागवती दीक्षा देते हैं'*** –यूँ जता कर **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने उन पर अपने अंतर की प्रसन्नता उड़ेल दी और... हम सभी को निहाल किया! 'जीवदशा' में रहे जीव सरलता से मिले इस अनमोल रत्न को परख नहीं पाते; पर प.पू. बापा द्वारा मिली अक्षरधाम की इस धरोहर का मोल अब हम तो समझें और समय व्यर्थ न गवाँएं–ऐसी प.पू. स्वामिजी के **'स्वर्ण दीक्षा महोत्सव'** पर अंतर से याचना!

सादगी, सरलता व मृदुता जिनका आभूषण है, ऐसे प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि...

हाल ही में दिल्ली से प.पू. गुरुजी की आज्ञा से प.पू. दीदी के साथ कुछ बहनें, प.पू. साहेबजी द्वारा नवनिर्मित मंदिर के उद्‌घाटन समारोह का लाभ लेने के लिए लंदन गई थीं। उनमें से कुछ बहनें पहली बार लंदन गई थीं। सो, ऐसा कार्यक्रम बनाया कि समारोह से पहले ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की प्रसादी की जगह देख आएँ। इस हेतु ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से खूब जुड़े प.भ. किशोरभाई मास्टर्स से प.पू. दीदी ने बात की। प.पू. दिनकरभाई भी उसी दिन अमेरिका से आए थे। जैसे ही प.पू. दिनकरभाई ने सुना कि बहनें प्रसादी के स्थल देखने के लिए जा रही हैं, तो वे भी साथ में चलने के लिए तैयार हो गए। प.पू. दिनकरभाई की उम्र एवं सफर की थकान का गौर करते हुए प.पू. दीदी ने उन्हें आराम करने के लिए खूब कहलवाया। लेकिन, प.पू. दिनकरभाई साथ गए ही और हर एक स्थल पर धुन-भजन करवा कर प्रासादिक स्थलों पर अविस्मरणीय स्मृति दी। उनके सहज जीवन का अनुभव करने का यह भी एक मौका था, क्योंकि साथ में गए मुक्तों के साथ वे ऐसे घुलमिल गए कि **यह एहसास ही नहीं हुआ कि वे खूब बड़े हैं।** जैसा कि प.भ. किशोरभाई ने बताया, आश्चर्य तो यह था कि इतनी बार लंदन आने के बावजूद भी, प.पू. दिनकरभाई पहले कभी प्रासादिक स्थलों का दर्शन करने के लिए नहीं गए थे। सो, उनकी यह कृपा ही कही जाए कि अपनी

स्मृतियाँ देने के लिए और ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का माहात्म्य समझाने के लिए वे हर प्रासादिक स्थल पर साथ में गए...

ऐसे प.पू. दिनकरभाई के प्राकट्य पर्व पर प्रार्थना–

हे दिनकरभाई ! आपके मोबाइल पर मंद स्वर में निरंतर बजती 'स्वामिनारायण' की धुन के साथ, आपके मुख से प्रवाहित ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्मृति प्रसंगों की अमृतधारा, संपर्क में आने वालों को अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर करती है। दरअसल, आपका **सहज जीवन 'स्व' की अस्मिता से मुक्त है।** यही कारण है कि अल्प संबंध वाले को भी आप ब्रह्मस्वरूप काकाजी का स्वरूप मान कर, उनकी मरजी में तुरंत शामिल हो जाते हो। आपको खुद भले ही कसनी सहनी पड़े, लेकिन अन्यों को सुविधा देने के लिए सदैव तत्पर रहते हो और... ऐसी कसनी की भक्ति का किसी को एहसास भी नहीं होने देते। **यहाँ-वहाँ, ऐसे-वैसे, जैसे-तैसे चला लेने की आपसे प्रेरणा मिलती है।** पर, स्वभाव या अपने देहाध्यास के वश हम अकसर चूक जाते हैं। आपकी हृदयस्पर्शी ऐसी स्मृतियों-प्रसंगों का सतत स्मरण रखते हुए, हम प्रत्यक्ष स्वरूपों की प्रसन्नता के अधिकारी बनें यही याचना...

'ज्ञानज्योति' का प्रतीक 'दीपावली' एवं 'नूतन वर्ष'

दीपावली का सामान्य अर्थ है – प्रकाश का पर्व ! रावणरूपी अहंकार का संहार करने के बाद, श्री रामचंद्रजी के अयोध्या में आगमन पर, सभी ने घर-घर दीप प्रगटा कर न केवल अपनी खुशी ज़ाहिर की, बल्कि एक विश्वास प्रकट किया कि श्री राम की उपस्थिति से अब सब सुखी व समृद्ध रहेंगे।

पर, दीपावली का निहितार्थ है – अंतःकरण को जाग्रत करना! **अज्ञान और मोह से मुक्त होकर जीव जब 'ब्रह्मज्ञान' प्राप्त करता है, तभी शाश्वत् प्रकाश उत्पन्न होता है।** प्रकृति के आधीन जीते जीव के अंतर में प्रकाश केवल प्रभुधारक संत के संबंध से ही हो सकता है। जन्मों-जन्म के अज्ञान और मोह के गहरे अंधकार को, ज्ञानरूपी दीपक से मिटाने के लिए, समर्थ संत ही अनिवार्य हैं। समर्थ संत ही जीव को भीतर के स्वभावों की गंदगी की कालिमा से अलिप्त करके, जीव में प्रकाशमय दीप प्रकटा सकते हैं। वे ही हमें सही अर्थ में सुखी-सुखी कर सकते हैं और... हमारा अहोभाग्य है कि हमारे जीवन की अनंत प्रकार की 'होली' को 'दीवाली' में परिवर्तित करने वाले, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसे प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की हमें गोद मिली। वे केवल हमारे हमजोली बन कर ही नहीं रहे हैं, बल्कि खुद ग़रज़ रख कर हमसे प्रीति की, हमारे प्रारब्ध भी अपने सिर पर लिए। हर पल हमें सुखी करने के लिए उन्होंने दिन-रात अथक् परिश्रम किए हैं।

जगत में प्रारब्धवश कई बार हमें बहुत कुछ सहना पड़ता है। देह के संबंधियों की त्रुटियों एवं प्रपंचों को अनदेखा भी करना पड़ता है या झूठे पक्ष का साथ देकर 'जी हज़ूरी' भी करनी पड़ती है। लेकिन, सत्संग में संत की प्रसन्नता हेतु हम यह नहीं कर पाते, क्योंकि – सत्संग समाज को हमने दिल की सच्चाई से अपना नहीं माना।

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी ने प्रकरण 11 की 190 वीं बात में बताया –

*जगत में तो डांटे-फटकारें, तब भी किसी के मन में गांठ नहीं पड़ती। इसका दृष्टांत देते हुए कहा – मैं और **मुक्तानंदस्वामिजी** एक बार सूरत-तापी में नहाने जा रहे थे। वहाँ रास्ते में एक लकड़हारा और उसकी पत्नी आपस में लड़ रहे थे। गुस्से में लकड़हारे ने अपनी पत्नी के सिर पर कुल्हाड़ी दे मारी और उसके सिर से लहू निकलने लगा। लकड़हारा तो लकड़ी काटने के लिए चला गया।*

हम जब नहा कर लौट रहे थे, तब किसी से पूछा – थोड़ी देर पहले यहाँ कुछ झगड़ा हो रहा था, उसका क्या हुआ ?

तब भक्तों ने देखा कि लकड़हारे की पत्नी तो अनाज पीसने के लिए बैठी थी।

पूछने पर उस स्त्री ने उत्तर दिया – वह जो लकड़ी काटने के लिए गया है, जब लौटेगा तो उसके मुँह में तो कुछ ड़ालना ही पड़ेगा ना ? इसलिए पीस रही हूँ।

*यह बात भक्तों ने जब **मुक्तानंदस्वामिजी** से कही, तब **मुक्तानंदस्वामिजी** ने कहा – देखो, देह के सगे के प्रति कैसा लगाव है ? ऐसा लगाव सत्संग में रहता है क्या ?*

गुणातीत स्वरूपों की तो यही तमन्ना है कि प्रगट प्रभु के संबंध वाले मुक्तों के प्रति पूर्वाग्रह छोड़ कर, हम दिव्य समाज में आनंद-किल्लोल करते रहें। भक्तों के स्वभाव-प्रकृति को निभाने की भावना न रख कर, उन्हें दिव्य मानने की राह पर अग्रसर होंगे, तो अंतःकरण में पूर्ण समर्पण का दीप प्रज्वलित होगा और... हठ, मान, ईर्ष्यारूपी रावण का संहार करके, प्रभु भीतर में प्रकट हो जाएँगे। वही हमारे लिए सच्ची दीवाली होगी !

प.पू. गुरुजी के स्वमुख से सुना है कि **गुरुहरि योगीजी महाराज** सेवा या भक्ति का निर्देश देते हुए कहते – ***'नित्य नवीन श्रद्धा रखना !'***

प.पू. गुरुजी के मन में प्रश्न उठता था – *श्रद्धा तो एक बार बैठी सो बैठी; 'नित्य नवीन' कैसे बनती होगी ?* गुरुहरि योगीजी महाराज से जब उन्होंने यह पूछा तो **प.पू. बापा ने फट् से कह दिया – *नित्य भूख लगती है न ? वैसे !***

और... प.पू. बापा के इस आशीर्वचन का मर्म समझते हुए एवं उनकी निरंतर स्मृति करते हुए, प.पू. गुरुजी भी अपने संबंध में आते मुक्तों से यही कहते हैं।

तो आओ, **'नवीन श्रद्धा'** से, हम अपने जड़ स्वभावों के पुराने लेखे-जोखे से मुक्त होकर, आत्मबुद्धि और प्रीति के प्रकाश से युक्त होने के लिए, **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** द्वारा बरसाए **दीवाली – नूतन वर्ष** के आशीर्वाद आत्मसात् करें...

दीवाली शुभाशीष

आओ... आओ... हम सभी प्रेम, आनंद और उत्साह से

परम पवित्र प्रातः स्मरणीय शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की कृपा को

मिलजुल कर संपूर्ण रूप से आत्मसात् करें।

सूर्य की भाँति सभी के लिए वह खुली है,

परंतु आध्यात्मिकता की ऐसी भूख, तमन्ना, झंखना, प्यास और परीक्षित जैसी लगन न होने के कारण

हमारे मन और मूल प्रकृति के मूलभूत स्वरूप में बदलाव नहीं आता।

सद्गुरुकृपा से-प्रत्यक्ष निर्गुणस्वरूप के जोग में तो आए, उनसे लगाव भी हुआ, कसनी भी सही,

फिर भी सभी को अपनी-अपनी स्वरूपलक्षी सोच और समझ का भेद,

मानसिक भूमिका में बाधारूप बनती रहती है।

फलतः एक देशस्थ ज्ञान-व्यक्तिभाव दृढ़ हो जाता है।

सहजानंद की असली मूर्ति तो एक ही है। वे ही सर्वोपरि भगवान हैं -नारायण हैं
और उनका परम सत्य स्वरूप गुणातीत है, सनातन अखंड विभूति है।
उनके साथ प्रत्यक्ष स्वरूप की अप्रतिम एकता होती ही है, सो ही वे मोक्ष का द्वार हैं।
मोक्ष के ऐसे कई द्वार होते हैं।

पू. स्वामीबापा कहते– ऐसे अक्षरब्रह्म के साधर्म्य को पाए सभी स्वरूप कल्याणदाता हैं।
जैसे कि भगतजी महाराज, जागास्वामी वगैरह...
पर, महाराज तो एक ही–अद्वितीय–'एक रति बिन एक रति को'।
सच्चे संत की कृपा से ब्रह्मरूप हों, तब ऐसा **'अभेदाभेद'** दृढ़ होता है। वे ही सच्चे परम एकांतिक हैं !
'वेदरस' के आख़िरी पृष्ठ पर महाराज ने यह बात स्पष्ट की है।
ऐसे सनातन तत्त्वों की अमर विरासत हमें कृपा में मिली है।
तो, उसकी हिफ़ाज़त करके,
हमें अंतर्दृष्टि कराएँ ऐसे भगवदी या निष्ठा वाले या अचल मति वाले मुक्तों के साथ ओतप्रोत होंगे,
तब ही संबंध वाले में दिव्यभाव रहेगा। यह बुनियाद है।
अतः गुणातीतज्ञान के मूलभूत रहस्य में–
भगवान, संत और भगवदी को आगे रख कर ही हम अपनी छोटी-बड़ी प्रवृत्तियों का आरंभ करेंगे,
तो हर रोज़ प्रकाश अर्थात् दीपावली व नया वर्ष और अखंड आनंद !
यूँ, अंतिम अवस्था में–सुख, शांति, बल और आनंद के बजाय,
ऐसी सच्ची सहजावस्था प्राप्त होती है।
सभी ऐसा–

✻ सर्वदेशी स्वरूपनिष्ठ सेवक का ज्ञान,
✻ सर्वदेशी सरलता और रंकभाव का ज्ञान

दृढ़ कर सकें, ऐसी स्वामिश्रीजी और बुद्धपुरुषों से प्रार्थना।

मन या अंतःकरण से देखा, जाना, अनुभवा या स्वीकारा हुआ
इस तत्त्व का-स्वरूप का ज्ञान बंधनकारी है।

यहाँ **'गुणातीतज्ञान'** पृथक हो जाता है।
यहाँ स्वरूपज्ञान और व्यवहार का ज्ञान संपूर्ण है; सो **पल-पल का जीवन चैतन्यमय व आनंदमय है, पूर्ण है।**
तो, ख़ुद से एक ही प्रश्न पूछना लाज़मी है कि–
हम अपने मन से–उस बंदर के अधीन रह कर तो कुछ करते नहीं ना ?
फिर भले ही वह सत्संग की क्रिया हो, मंदिर की हो या व्यवहार की हो,
लेकिन सत्पुरुष में से, स्व-स्वरूप में से या आत्मतत्त्व में से सहज ही आए ऐसा–
इच्छा-अपेक्षारहित का जीवन उनकी प्रसन्नता के लिए जिएँगे,
तभी भगवान और संत के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त होगी।
'सत्पुरुष की आज्ञा' एक पहलू है ; पर उसके साथ उतना ही जरूरी दूसरा पहलू **'जड़-चैतन्य का विवेक'** है।

प्रत्यक्ष की उपासना और सर्वोपरिभाव से प्रत्यक्ष स्वरूप का सेवन करना जितना जरूरी है,
उतना ही दूसरे छोर पर स्वामीसेवकभाव भी जरूरी है।
वर्ना 'ब्रह्मज्ञान' भी अभद्र हो जाएगा–ऐसा स्वामी की बातों के प्रकरण 8 और 10 में स्पष्ट रूप से कहा है।
यह बात गुणातीत ज्ञान में **'अति बड़े संत'** की कृपा से समझ में आती है।
बापा ने ऐसे बुद्धपुरुषों की पहचान हमें कराई है।
उनमें लय होकर, एकता करके, फिर प्रभु की प्रेरणा के मुताबिक जीना है।
मान्यता के मुताबिक नहीं, अपने-अपने अनुभव के मुताबिक भी नहीं, परंतु अनुभूति के मुताबिक।
और फिलहाल तो–
अनुभूति वाला जीवन जीते ऐसे चैतन्यपुरुष द्वारा यह बात देश-विदेश में ज़ाहिर हो गई।
कहीं भी अतिरेक या उदासीनता होगी, तो पू. बापा निकाल देंगे।
बुद्धपुरुष भी समझते तो हैं, लेकिन शिष्यों को टिकाने-निभाने,
शायद अंतिम छलांग लगाने में एकत्वभाव से प्रभु का काम करने में, शिष्यों के जीव को बल देने के लिए,
जानबूझ कर वे कई चीजें चलने देते होंगे।
वर्ना तो, सामान्य व्यक्ति को जो समझ में आ जाता है, वो उन्हें समझ नहीं आता होगा क्या?
अतः **पू. बापा और महाराज का पूरा भरोसा और विश्वास रख कर,**
हमें अंतर्दृष्टि करवाने वाले, टोकने वाले, डाँटने वाले भगवदी के साथ सुहृद्भाव बना कर,
बुद्धपुरुषों-प. पू. महंतस्वामी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. काकाजी और प.पू. स्वामिजी के अंतर की हम प्रसन्नता प्राप्त करें।
नए वर्ष में सभी के अंतर में ऐसा दिव्य प्रकाश हो जाए यही अभ्यर्थना।
अंत में स्वरूपज्ञान का साक्षात्कार यानि–
सहजानंदस्वामी पर के पर और समग्र सत्संग दिव्य, निर्गुण, चैतन्यमय दिखाई दे।
यहाँ–

✻ जीव का-चैतन्य का अणुबिंदु
✻ सत्पुरुष का महत्‌बिंदु
  और
✻ नारायण का-श्रीजी महाराज का परमबिंदु–एक हो जाता है।

दृष्टा, दृश्य, दर्शन आपस-आपस में मिल जाकर दिव्यदृष्टि से इस जगत में हम जहाँ भी हों वहाँ
अहोहोभाव-महिमा से सेवा किया करें और गुणगान गाते रहें–यही सच्चा सुहृद्भाव है।
सभी के अंतर में वह प्रगटे और विकसे यही बुद्धपुरुषों से प्रार्थना।
इस भावना को हाथ-पैर आएँ, वह व्यापक बने और हम चिदाकाश में उड़ने लगे –
यही इस मंगलकारी नए वर्ष की मंगल प्रभात पर अंतर की अभीप्सा के साथ,
समग्र गुणातीत समाज की जय हो, जय हो, जय हो।

✻✻✻

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

(15 मई, 2015 – प.पू. गुरुजी द्वारा 'योगीवाणी' के सूत्रों का निरूपण...)

✻ आपणा केटला पुण्य त्यारे आ सत्संग मळयो...

(हमारे कितने पुण्य हैं, तब यह सत्संग मिला...)

देखो, यह बात मैं कह रहा था, पर हमें यह भरोसा नहीं है। पुण्य! यानि हम कितने भाग्यशाली हैं कि यह सत्संग हमें मिला हुआ है!

✻ नहीं तो वैभव-विलास, मोटर आपीने पतावी दीधुं होत...

(वर्ना तो वैभव-विलास, कार देकर 'निपटा दिया होता...')

बापा ने यह क्या बात की? कैसे शब्द इस्तेमाल किए? **'निपटा दिया होता!'** छोटा बच्चा यदि ऐसी किसी वस्तु के लिए ज़िद्द करे जो उसे नुकसान पहुँचाने वाली हो, तो उसे झुनझुना या खिलौना या लॉलीपॉप देकर पटा लेते हैं। उसी प्रकार, हम भले कोई लौकिक मांग करें, लेकिन **हमारे पुण्य इतने ज़ोरदार हैं** और **हमारे प्रभु भी ऐसे समर्थ हैं कि जो मांग-इच्छाएँ हमारे जीव का अहित करे, उन्हें गिने बिना हमें यह 'सत्संग' दिया।** इससे बापा ने समझाया कि हमें जो यह सत्संग मिला है, हम खूब भाग्यशाली हैं – खुशनसीब हैं।

थोड़ा बहुत इधर-उधर दान-पुण्य किया होता, तो इस लोक का 'वैभव' जैसे – तुम्हारा फ्लैट हो उसके बदले कोठी बन जाए। 'विलास' यानि ऐशो-आराम। तुम्हारे पास स्कूटर हो, तो मोटर-गाड़ी आ जाए। कई भक्त कहते भी हैं कि जब वे सत्संग में आए, तब साइकिल रिक्शा में आते थे। धीरे-धीरे स्कूटर आया और अब गाड़ी आ गई। पर, सत्संग का फल यह नहीं है। हम भले यूं नापते-करते हैं। 'सत्संग' का फल क्या होना चाहिए, यह हमें पता ही नहीं है। **सत्संग का एक ही फल है और वह फल है कि हमारे स्वभाव टलें!**

...भीतर में खूब सोचना कि इतना रॅग्युलर सत्संग करने के बावजूद भी हमारे स्वभाव टले क्या? भीतर में लगेगा – 'नहीं टले।' इसका मतलब यह हुआ कि हम अब तक सत्संग का सही अर्थ ही नहीं समझ पाए। **काकाजी** बोलते थे – ***'सत्संग यानि सत्पुरुष!'*** मंदिर रॅग्युलर आना, आरती का घंट बजाना, ठाकुरजी के पास दंडवत् करना, एक पांव पर खड़े रह कर माला फिराना या व्रत, दान, तप, जगराते करना 'सत्संग' नहीं है।

मैंने एक बार बात की भी थी कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री मोरारजी देसाई ने शास्त्रीजी महाराज से पूछा था – *स्वामी, आप 'सत्संग-सत्संग' कहते हो, उसका मतलब क्या?*

शास्त्रीजी महाराज ने बोला था –

बड़े संत के पास हाथ जोड़ना और वे जो कहें वैसा करना यही 'सत्संग' है!

जवाब कितना शॉर्ट है? लेकिन करना खूब कठिन है।

मैं तो आज अटेन्डन्स देख कर खुश हो गया। बाहर बॉर्ड लगा देना पड़ेगा – 'हाऊसफुल'। आज कोई कह रहा था कि लगता है अब यह हॉल छोटा पड़ेगा। मैंने बोला ऐसा न कहो। हमें **'भीड़'** इकट्ठी नहीं करनी है।

मैं तो यह कहना चाहता था कि मैं जानता हूँ कि आज सभी आए हैं, पर 7 बजे से पहले नहीं आए हैं। देखो, जब से गवर्नमॅन्ट में स्ट्रिक्टनेस हुई है, तब से कैसे सब सीधे-सीधे चलते हैं? मैंने सुना है कि अब सारे ब्यूरोकॅट्स भी ठीक 9:00 बजे ऑफिस पहुंच जाते हैं... सन-डे को भी कितना पंक्च्युअली काम करना पड़ता है ? इसी तरह 7 बजने में दो मिनिट पहले आप शिविर में जरूर, जरूर, जरूर, जरूर, जरूर, जरूर, जरूर हाज़िर हो जाना और मैं भी हाज़िर हो जाऊंगा! मुझे भी तो आपसे इनाम लेना है न! पिछली बार आप मुझे लूट कर गए हो। कम से कम 132 जने तो इनाम लेकर गए। तब से मैंने ठान रखी है कि अब मैं भी तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। अब तुम्हारी नीयत पर रहेगा कि तुम तीसों दिन 7 बजने से 1 मिनिट पहले आ जाओ; मैं तो आपको यहां मिलूंगा ही। तुम्हें इनाम लेने का कितना चाव था कि यदि आज एक दिन चूक गए तो? दीपक ने ही बात की थी कि 6:40 को उसके बॉस ने रुकने के लिए कहा, तो उसे लगा कि अब पहुंच नहीं सकूँगा, इनाम गया। वो उसे कितना पिंच हो गया? ऐसे ही यह भावना हो कि नहीं पहुंचेंगे, तो हम गुरुजी को इनाम नहीं दे पाएँगे। कितनों को यह पिंच होता है, मैं देखूंगा। ये मैं जवान लोगों से बात करता हूँ। काकाजी एक सेन्टेन्स कहते थे– *घरडा गलका कपाय नहीं।* मतलब तोरी पक गई हो और उस पर छुरी रखो, तो दब जाएगी, काटी नहीं जाएगी। लेकिन, पप्पाजी भी एक बात कहते थे कि जो डिटरमिन्ड रहता है, वो सच्चा जवान है। आप कितने ऐसे डिटरमिंड रहेंगे, वो अब देखते हैं। मैं चाहूंगा कि आप सबके सब मुझे इनाम दो। आप डरना नहीं, मैं तुम्हारे जैसा नहीं हूँ। मैं तुमसे इनाम लूंगा, पर आपकी गुंजाइश के मुताबिक... तुम तो पिछले साल सच में मुझे लूट ही गए।

आप नहीं आओगे, तो मैं भेंट नहीं लूंगा – यह बात भी ध्यान में रखना। मैं पूरी अटेन्डेन्स देखूंगा। तीसों तीस दिन आप 7 बजे आए हो, तो ही मैं आपसे भेंट लूँगा। आपकी गुंजाइश से थोड़ा ज्यादा – बहुत ज्यादा नहीं – आप झेल पाओ इतना। थोड़ा तो ज्यादा होना चाहिए, तभी याद रहेगा कि हमने गुरुजी को कुछ दिया था!

* आपण्या केटला पुण्य त्यारे आ सत्संग मळ्यो।
(हमारे कितने पुण्य के फलस्वरूप यह सत्संग मिला।)

फिर से कहता हूँ – हमारे पुण्य कितने अधिक होंगे तब यह सत्संग मिला है! **छोटा-बड़ा पुण्य किया होता, तो वैभव-विलास, व्यवहार का थोड़ा सुख देकर महाराज ने निपटारा कर दिया होता। कहते – टलो यहां से, यह ले जाओ; पर यह सत्संग नहीं मिलता।**

मूल खामी यही है कि हमारे स्वभाव, प्रकृति, दोष, प्रारब्ध जो हमें परेशान करते हैं, वो टलते नहीं और हम जन्म-मरण के चक्कर में फंसे रहते हैं।

* **मर्या पछी आपणे क्यां जाईशुं, ते मुंझवणनो पार न रह्यो होय. आखी दुनिया अने मोटा-मोटा तो वधारे मूंझाय. पूछीने तपास करीने जुओने, तो खबर पडे. आपणने मोटानो आसरो मळी गयो छे. पछी गरीब देखाइए, लोकनी दृष्टिअे दुखी देखाइए.**

(मरने के बाद हम कहाँ जाएँगे, इस चिंता का पार नहीं आता। पूरी दुनिया और बड़े-बड़े तो ज्यादा चिंतित होते हैं। पूछ कर ढूँढोगे तो ख्याल पड़ेगा। हमें बड़े का आसरा मिल गया है। फिर भले लोगों की नज़र में गरीब-दुःखी दिखाई दें।)

यह खूब समझ रखना। ऐसा सत्संग-यह आसरा मिल गया; फिर **व्यवहार से हम भले गरीब दिखें, लोग भी मानें कि ये इतने दुःखी हैं। लेकिन, हम जरूर मानें कि वे अपने लेवल से ही देखते हैं।** मैंने एक बार बात की थी। जूनागढ़ में **'मावा भगत'** था। वो एक बार घर में बैठ कर बाजरे की रोटी सिर्फ मिर्च के साथ खा रहा था। किसी ने उसे देखा, तो दया से कहा– मावा, खाली सूखी रोटी खाता है। मतलब, सिर्फ रोटी खा रहा है? पर, वो एकदम बोला– खाली कौन खाता है? भगवान को याद करके खाता हूँ। उसे कितनी खुमारी थी? खाली ही खा रहा था, लेकिन दिल से मानता था कि साथ में भगवान खा रहे हैं और वो मिठास-मस्ती अलग थी। और हम...? थोड़ी कसनी आती है, तो हमें लगता है कि क्या है यह सत्संग? कर-करके थक गए। महाराज ने हमारा कुछ किया नहीं। पर, मावा भगत जैसी समझ रखें।

आज बापा की जयंती है। हम में और बापा में कितना फर्क है ? बापा की 76 साल की उम्र थी, तब की यह बात है। बापा शास्त्रीजी महाराज के प्राकट्य स्थान 'महेळाव' गए थे। वहां मानो वे शास्त्रीजी महाराज के साथ 'रूबरू' बातें कर रहे हों, यूँ मूर्ति के सामने प्रार्थना की।

मुझे याद है– 'स्वामिनारायण प्रकाश' में जब मैंने पहली बार वह प्रार्थना पढ़ी, तो मुझे खूब पसंद आई। विद्यानगर में पौषी पूनम की शिविर चल रही थी और मैंने काकाजी को वह प्रार्थना पढ़ने के लिए दी कि बहुत अच्छी है। काकाजी खड़े थे और खड़े-खड़े ही एकदम उसमें से 6-7 पॉईन्ट्स अलग करके मुझे दिए कि अपनी पत्रिका में ये **'महेळाव के संकल्प'** का शीर्षक देकर ले लेना। करीब 3-4 पेज की वो प्रार्थना थी। काकाजी का वो **'ब्रेइन'** था कि फटाफट उसी समय छांट कर पॉइन्ट्स दे दिए। मैं तो तब ताज़्ज़ुब रह गया था।

उस प्रार्थना में **योगीजी महाराज** बोले– ***हे शास्त्रीजी महाराज! आपकी 'कसनी' में हम हमेशा रह सकें, ऐसा आशीर्वाद देना।*** 76 साल की उम्र में वे ऐसा बोले कि हे शास्त्रीजी महाराज ! आपकी कसनी-भींस में रखना। जबकि उन्हें शास्त्रीजी महाराज की कसनी तो कोई लगी ही नहीं थी। साथ वाले भक्तों-संतों की-मुक्तों की कसनी थी। हम हों तो क्या प्रार्थना करते– *महाराज 76 साल होने आए, अब कहां तक ऐसे भींस में रखना है, अब तो कुछ रहम करो।*

आसमान-पाताल का फर्क है न? मैंने पहले भी यह बात की है कि **शास्त्रीजी महाराज** ने कहा था– *योगी, रसोई संभालना।* अब तो रसोई में कितनी सुविधा हो गई है। गैस, ओवन, माइक्रोओवन,

आटा गूंधने और रोटी बेलने की भी मशीन, सब रेडीमेड! उस समय तो गर्मियों में पहले फूंक-फूंक कर चूल्हा जलाना पड़ता था। तत्कालीन भगत भी योगीजी महाराज को एक ऑर्डिनरी साधु समझ कर कितना रौब झाड़ते। लेकिन, बापा उन सबके लिए स्पॅश्यली फुल्का बनाते। ऐसी सेवा लगातार 40 साल तक की! आप विचार तो करो। हमने बातें सुनी भी हैं कि पहले सौराष्ट्र के लिए डायरॅक्ट ट्रेइन्स नहीं थीं। अमदाबाद से बदल कर गोंडल जाना पड़ता था। दोपहर को डेढ़ बजे एक ट्रेन आती थी। योगीजी महाराज तब तक राह देखते कि कोई आ जाएगा तो मज़ा आएगा। मुसीबत समझ कर नहीं, बल्कि इस भावना से कि कोई आएगा तो खाना खिलाने का मौका मिल जाएगा और सबको खाना खिलाकर फिर खाना खाऊँ। **यदि कभी कोई न आया हो, तो बापा उदास हो जाते थे कि आज कोई आया नहीं।** दूसरी ओर, हम तो ऐसा सोचते हैं कि चलो, आज शांति है कि कोई आया नहीं। कई बार तो ऐसा भी हुआ है कि राह देख-देख कर बापा ने बस अपना पत्तल लगाया ही कि इतने में कोई आ जाए और यदि खाना बचा ही न हो, तो वे खुद अपने पत्तल में से 'थाली' बना कर उसे खाना खिला देते। ऐसी कसनी में वे रहे हैं। मैंने बताया था कि मंदिरों में कंस्ट्रक्शन का काम भी तब चलता था। जब योगीजी महाराज उस सेवा के लिए जाते, तो मज़दूर भी उन्हें सीमेंट-मिक्स्चर तसला ज़्यादा भर कर देते। पर, वे हमेशा भगतजी महाराज की तरह कहते- *'लाओ महाराज।'*

काकाजी के लिए तो कसनी धीरे-धीरे अलग स्वरूप लेती गई। यदि बाहर का और कोई परेशान कर जाए, उपेक्षा करे या इंसल्ट कर जाए, तो वो सह पाएँगे। लेकिन, **अपने ही लोग, जिनके लिए हमने खून बहा दिया हो, जिनकी महिमा गा-गाकर हमने उन्हें सॅट किया हो-सत्संग समाज में उनकी महिमा बिठाई हो, वे हमें कुछ गिने ही नहीं, हमें एवॉइड करने की कोशिश करें, हमसे इतराते रहें और तब भी उनके प्रति उतना ही भाव, जितना अपने से जुड़े भक्तों के लिए हो।** हम रख सकते हैं क्या? ...मैं नहीं कहता कि आप आपस में भिड़ जाते हो, लेकिन एवॉइड तो जरूर करते होंगे।

इस एक महीने की शिविर के अंदर हम सब इससे परे हो जाएँ। वो हम सच्चे काकाजी और गुणातीत समाज के।

गुणातीत समाज काकाजी की एक जीवंत स्मृति है। सो, हरेक को अपना ही समझ करके, केवल अपना ही नहीं- पर उसकी जगह पर अपने आपको मानें। हम अपना दोष कभी देखते हैं-मानते हैं क्या? पर, यह रवैया अपनाएँगे, तो काकाजी बिना कहे हमें वरणीय हो जाएँगे। **साधु को अपना बना कर अपने पीछे घूमता करने का यह आसान तरीका है।**

* **तो सर्वशास्त्रना पारने पाम्या छीओ. आपणने जे प्राप्ति छे, ते प्राप्ति ब्रह्मांडमां कोईने नथी.**
(तो सारे शास्त्र के ज्ञान को पा लिया। हमें जो प्राप्ति हुई है, वह ब्रह्मांड में किसी को नहीं हुई।)

क्या ये बात हमने कभी दिल से मानी है कि हमें कैसी प्राप्ति हुई है! काकाजी जैसे गुणातीतभाव को पाए हुए संत जो हमें मिले हैं, ऐसी प्राप्ति ब्रह्मांड में किसी को नहीं है। मैंने जब पहली बार बापा से यह बात

सुनी कि ब्रह्मांडमां नथी, तो मुझे ऐसा ख्याल था ब्रह्मांड यानि पृथ्वी का एक गोला। पर, उनका कहने का मतलब था कि किसी भी जगह पर नहीं है। सूर्य लोक, चन्द्र लोक, मंगल – कितने ही लोक होंगे; हमें नाम भी पता नहीं है – वहाँ कहीं भी नहीं। 'हमें जो यह प्राप्ति हुई है' – उसके बारे में ऐसी बातें या तो कोई पागल बोलेगा या अनजान बोलेगा या भगवान का स्वरूप बोल सकता है। मैं यह जरूर समझता था कि बापा झूठ बोलें, ऐसे तो हैं नहीं; गप्पे ठोकें, ऐसे भी नहीं है। बापा ने यह बात की है, तो उसमें सच्चाई ही होगी।

हम ऐसा मानें तो क्या हम पर तनिक भी अन्य कोई प्रभाव पड़ेगा क्या? फलां हमारी अपेक्षा अच्छा है – ऐसा लगेगा क्या?

बच्छराज के बारे में मैंने 'पवित्र ब्राह्मण' की बात करी थी। **सच्ची पवित्रता** क्या है? **भगवान और संत के सिवा हम पर किसी का प्रभाव न पड़े, वो सच्ची पवित्रता है।** नहाने-धोने की पवित्रता तो ठीक है। इसका मतलब यह नहीं है कि नहाना नहीं है। क्लीन्लीनेस हरेक को रखनी ही चाहिए। सच्ची पवित्रता, सच्ची स्वच्छता यही है कि हमारे ऊपर भगवान और संत के सिवा अन्य किसी का भी – **कोई सत्ता, ऐश्वर्य-प्रताप, रिद्धि-सिद्धि वाले महात्मा, अवतार, मन सत्ता, राज सत्ता का कोई प्रभाव न पड़े, वैभव का प्रभाव न पड़े।**

* **ए कॅफ राखवो...** ***(यह कैफ़ रखना...)***

इस कैफ़ मस्ती / खुमारी में रहना कि ओहो जो किसी को नहीं मिला है, वो हमें मिल गया है। किसी को यानि तप कर-करके ऋषि-मुनि थक गए, उन्हें जो प्राप्ति नहीं हुई वो, गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी भगवान हम पर खूब ढल गए, हमें मिल गई।

* **भगवान ने भक्तोनो महिमा समजो...** ***(भगवान और भक्तों की महिमा समझो...)***

हमें महिमा नहीं है, इसलिए उन्हें यह कहना पड़ता है।

* **दिव्यभाव राखो तो कॅफ वर्तशे अने अनुभवमां मुकाशे...**
(दिव्यभाव रखोगे तो कैफ़ रहेगा और अनुभव होगा...)

दिव्यभाव रखोगे, तो क़ैफ-मस्ती बढ़ेगी। मैं देखता हूँ कि कई घुसुर-पुसुर करते रहते हैं, जैसे – *'यह सब तो ठीक है, लेकिन ये थोड़ा...'*। पप्पाजी एक बात बोले हैं कि सभी प्रगति करते चैतन्य हैं। आज हमें अपने लिए लगता है कि हमने थोड़ी एडवांस्मेंट की, वैसे ही हरेक ने नहीं की होगी क्या? किसी ने ज़्यादा की होगी, तो किसी ने कम की होगी। लेकिन, यह हमारे मन की एक क्षुल्लकता-क्षुद्रता है, जो हम अपनी त्रुटियाँ न देख करके दूसरों के बारे में ओपीनियन देते रहते हैं, चर्चा करते रहते हैं। पर, पप्पाजी बोलते थे– ***'गुणातीत ज्ञान में, किसी का दोष नहीं देखना' – यही एक क़ायदा है।*** वो इसीलिए कि – **गुणातीत समाज 'प्रारब्ध नियंत्रित' नहीं, 'ब्रह्मनियंत्रित' है।** पप्पाजी के पास जो भी गए होंगे, उन्होंने उनसे यह सेन्टेन्स सुना होगा – ***'गुणातीत समाज ब्रह्मनियंत्रित है।'*** मतलब, सारा कंट्रोल ऐसे भगवत्स्वरूप – गुणातीतभाव को पाए हुए संत का है।

*** अढळक ढळया शुं? आपणे जीव कोटिना, ब्रह्मकोटिमां दाखल थई गया!**
(अत्यधिक ढले क्या? जीव कोटि के, ब्रह्मकोटि में प्रवेश कर गए!)

भजन में आता है न मावजी (प्रभु) हम पर अढळक ढल गए हैं। वो क्या कि हम जीवकोटि के थे, हमें ब्रह्मकोटि में दाखिल कर दिया। **अब अभ्यास करके हमें उसकी सनद लेनी है...** अपनी सारी फिलॉसोफी लिविंग है। काकाजी एक बार बोले थे – आपणा (हमारे) भगवान तो प्रगट छे (हैं), आपणुं (हमारा) ज्ञान बी (भी) प्रगट छे (है)। कहीं भी एकचित्त से संत को याद करेंगे, तो वो ज्ञान प्रगट हो जाएगा। किस समय हमें क्या करना, वो फट् से ख्याल पड़ जाएगा। वो ज्ञान प्रगट हो जाएगा।

*** ध्यान धरीने घणां बाबा - महंतो बेठा छे. पण ते बाह्यदृष्टि छे.**
(ध्यान धर कर कई बाबा - महंत बैठे रहते हैं। लेकिन, वह बाह्यदृष्टि है।)

हरिद्वार, ऋषिकेष वगैरह में कई बाबा लोग बैठे रहते हैं। देखो, बापा ने कैसा शब्द यूज़ किया? साधु-संत बैठे हैं, ऐसा नहीं कहा। ऐसा कहा – 'बाबा-बैरागी' लोग बैठे हैं।

*** जेने भगवान अने संत मळया ते अंतर्दृष्टि...**
(जिसे भगवान और संत मिले, वह अंतर्दृष्टि...)

आंख मूंद के कई बैठते हैं, उन्हें देख कर सब मानेंगे कि अंतर्दृष्टि करके बैठे हैं। पर जिसे ऐसे भगवान का स्वरूप और संत मिले हैं, उनकी ओर निगाह रख कर जो जीते हैं, वह ही सच्ची 'अंतर्दृष्टि' है। काकाजी कहते थे – **'प्रगट' मिलने के बाद आध्यात्मिकता में सारे कायदे (आल्फाबॅट्स) बदल जाते हैं।** अंतर्दृष्टि की, मॅडीटेशन की व्याख्या ही बदल जाती है – **भगवान और संत जो मिले हैं, उनकी ओर निगाह रख कर रहो यही है – 'अंतर्दृष्टि'।**

मैं कई बार कह चुका हूँ कि अपने मंदिर की महाराज की मूर्ति बहुत सोणी है। सारे स्वामिनारायण संप्रदाय के अंदर हमारे महाराज की मूर्ति जैसी सोणी मूर्ति और कहीं नहीं है। सोणी और एक्ज़ेक्ट महाराज जैसी! मैंने आज ही एक भाई साहब से कहा – यह महाराज की जो मूर्ति है उसका दर्शन आप लगातार नहीं कर पाओगे, इतनी पावरफुल है। इस मूर्ति को जीवंत जानकर 40 मिनिट धुन करोगे, तो मूर्ति आपसे जरूर-जरूर बात करेगी।

*** आपणने मोटा पुरुष जीवकोटिमांथी ब्रह्मकोटिमां लई गया...**
(बड़े पुरुष हमें जीवकोटि में से ब्रह्मकोटि में ले गए...)

हम अपने आप ब्रह्मकोटि में कभी जा नहीं सकते थे। यह तो एक संबंध हुआ, तो फट् से हमारी कैटेगरी ही बदल गई। ये सेन्टेन्सिस ध्यान से सुनें, तो ख्याल आए। बापा के ऐसे कई सेन्टेन्सिस सोचने लायक है, जैसे – **'हम जीव कोटि में थे।' अपने आप ब्रह्मकोटि में तो जा ही नहीं सकते थे, इन्होंने हमें** दाखिल कर लिया। **मानो** हमें **उठा करके, खींच करके, गोद में बिठा लिया।** ऐसी कैसी - कैसी बातें की हैं! **'भगवान के साथ का संबंध हो, तो हमारी रक्षा करे बिना भगवान का छुटकारा नहीं**

है।' मतलब, भगवान के ऊपर कम्पल्झन आ गया न ? हम कई बार ऐसे फंसे होते हैं, तो सोचते हैं – भगवान हमारी रक्षा करेंगे या नहीं ? हमारे करम ही ऐसे हैं, फिर भगवान कैसे रक्षा करेंगे ? अरे ! **भगवान हमारे कर्म, और हमारे अवगुण देखते ही नहीं हैं, सिर्फ संबंध देखते हैं।** एक महीने की इस शिविर में एक यह पक्का करके जाएँ या ठहराव करके जाएँ कि हमें जो काकाजी का संबंध मिला है, हमसे बड़ा भाग्यशाली, हमसे ज़्यादा खुशकिस्मत और कोई है ही नहीं।

* **फलां महात्मा बहु सारा छे, ते पण वृत्ति गौण थई कहेवाय.**
  (फलां महात्मा बहुत अच्छे हैं, वह भी वृत्ति गौण हुई कही जाए।)
  हम पर कोई प्रभाव न पड़े, इसका यह इलस्ट्रेशन है। फलाने महात्मा बहुत अच्छे हैं, ऐसा कहना या सोचना – वो भी हमारी वृत्ति भगवान और अपने संत के प्रति गौण हो गई। **निष्ठा डगमगा गई और फिर हम कहें कि भगवान हमारा अच्छा करो, कैसे करेंगे?** *(ध्वनिमुद्रण से संकलित)*

* * *

विदेश की महाप्रासादिक जगह लंदन में बिराजे श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज!

गुणातीत परंपरा के ज्योतिर्धर आज जब सात समुंदर पार विदेश में श्री स्वामिनारायण की – श्री **अक्षरपुरूषोत्तम की 'युगल उपासना'** का ध्वज फहरा रहे हैं, तब हम भूलें नहीं कि आज से करीब **200** वर्ष पहले **'बोचासण'** गाँव में पूज्य काशीदासजी के यहाँ **भगवान स्वामिनारायण** ने आशीर्वाद दिया था –

'इस तीर्थधाम की ख्याति समुद्र के उस पार भी फैल जाएगी।'

श्रीजी के इस वचन को चरितार्थ करने के चक्र को मानो गतिमान करने के लिए, **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने अपने पनौते पुत्र **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** को सबसे पहले **1954** की जनवरी में अफ्रीका भेजा। इसके बाद भी प.पू. बापा द्वारा की गई विदेश की कल्याण यात्राओं में प.पू. योगीबापा का माहात्म्य गाने-समझाने के लिए, प.पू. काकाजी पहले ही पहुँच जाते या उनके साथ जाते। 1966 में संस्था ने प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी को विमुख किया। सो, **1973 में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, प.पू. साहेबजी** को अपने साथ लेकर लंदन की भूमि पर रहते मुमुक्षुओं के कल्याण हेतु लंदन गए। यूँ तो करीब 1941-44 के बीच प.पू. काकाजी ने लंदन में 'लंदन स्कूल ऑफ इक्नोमिक्स' से पढ़ाई की और बाद में व्यापार हेतु भी कई बार गए थे। पर, प.पू. साहेबजी प.पू. काकाजी के साथ पहली बार ही गए थे। उसके बाद 1975 से **'अनुपम मिशन'** के अन्य भाइयों के साथ प.पू. साहेबजी लगातार वहाँ जाने लगे और धीरे-धीरे सत्संग का विकास होने लगा। **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज** की निश्रा में **'गुणातीत ज्योत'** की बहनें भी इस भागीरथ-कार्य में जुड़ीं। और... **1980** में प.पू. साहेब के साथ, प.भ. वीनुभाई नकारजा की दुकान पर जाते हुए लंदन के 'डॅनहाम' क्षेत्र से गुजरते हुए, हाथ में माला लिए चैतन्यजननी **प.पू. सोनाबा** इशारा करते हुए बोली थीं –

यहां इतनी ज़मीन पड़ी है, यहीं कहीं मंदिर के लिए ले लो...

थोड़े समय बाद ही प.भ. वीनूभाई नकारजा को किसी ने बताया कि यह ज़मीन बिकाऊ है। लेकिन, सब असमंजस में ही थे कि यह ज़मीन लें या नहीं। तब **1981** में पॅरिस से शिकागो जाते हुए प.पू. काकाजी अचानक हिथ्रो-लंदन एयरपोर्ट पर उतरे और उन्होंने लेने आने के लिए पू. हिमंतस्वामी को फोन किया। और... पू. हिमंतस्वामी की विनती स्वीकार करके **प.पू. काकाजी** उस जगह गए व सबकी दुविधा दूर करते हुए वहाँ बने मकान के नज़दीक के पेड़ (जो आज भी वहाँ मौजूद है) के पास खड़े रह कर, बोले–

'पप्पाजी मैं हूँ, बा भी मैं हूँ, साहेब भी मैं हूँ, स्वामिनारायण भगवान भी मैं हूँ, जो भी मानना हो वह मान कर तू यह ले ही ले।'

फिर तो वह जगह खरीद ली गई और साधक भाइयों और वहाँ के स्थानिक मुक्तों ने, भक्तिभरे हृदय से खूब मेहनत करके, मकान और आस-पास की ज़मीन को बहुत बढ़िया बना दिया। तकरीबन हर वर्ष प.पू. काकाजी वहाँ पधारे और 1985 अगस्त में पॅरिस से अमेरिका जाते हुए, अंतिम बार इस जगह को पावन करने के लिए आए थे। **23 मई, 1989** को प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एवं प.पू. साहेबजी के वरद् हस्तों वहाँ खड़े मकान में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति स्थापित की गई। प.पू. साहेबजी की प्रेरणा-बल से **पू. हिमंतस्वामिजी** ने भीड़ा-भक्ति करते हुए कइयों को प.पू. साहेबजी की दिव्यता का दर्शन कराया-उनमें जोड़ा।

और... अब गुणातीत स्वरूपों की इसी महाप्रासादिक भूमि पर ही **संत भगवंत प.पू. साहेबजी** के **अमृतपर्व** के मंगलकारी वर्ष में नूतन शिखरबद्ध मंदिर के उद्घाटन का अवसर आया, जब **5 से 12 अगस्त 2015** – सात दिन **भाईश्री पूज्य रमेशभाई ओझा** ने श्रीमद्भागवत् कथा से सभी को लाभांवित किया। गुणातीत समाज के इस अनमोल अवसर पर दर्शन, सेवा, समागम का लाभ लेने, प.पू. गुरुजी ने दिल्ली से **प.पू. दीदी** के साथ छः बहनों को लंदन भेजा। **12 अगस्त** की सायं करीब पौने सात बजे एयर इंडिया की फ्लाईट से प.पू. दीदी बहनों के साथ लंदन-हिथ्रो एयरपोर्ट पर पहुँची। लंदन की इस पूरी ट्रिप के दौरान प.पू. दीदी व बहनें दिल्ली के **प.भ. धीरुभाई कापड़िया - सौ. सुरेखा बहन** के सुपुत्र **प.भ. मिहिरभाई** के घर ही ठहरीं। प.भ. मिहिरभाई, सौ. रेखाभाभी और उनकी ग्यारह वर्षीय बेटी नित्या ने खूब अपनेपन का एहसास कराया। विदेशी माहौल में रहते हुए भी, प.भ. मिहिरभाई एवं सौ. रेखाभाभी ने माता-पिता से मिले संस्कारों को संजोए रखते हुए अपने बच्चों में भी उन्हीं संस्कारों का सिंचन किया है। उनकी सेवा-आत्मीयता का सहज ही स्मरण होता है।

13 अगस्त की सायं मंदिर महोत्सव के विविध कार्यक्रमों का शुभ आरंभ हुआ और **16 अगस्त – श्रावण शुक्ल-2, ब्रह्मस्वरूपीणी सोनाबा की प्राकट्य तिथि** की प्रातः प्रगट ब्रह्मस्वरूप **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** व **प.पू. साहेबजी** द्वारा, संतों-मुक्तों की उपस्थिति में वेदोक्तविधि से मूर्तिप्रतिष्ठा विधि संपन्न किए जाने के पश्चात् **प.पू. साहेबजी** के **अमृतपर्व** की सभा हुई।

महोत्सव के मांगलिक दिवसों में आध्यात्मिक भोजन के साथ-साथ, सभी मुक्तों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम, ध्वज वंदन, मूर्तियों की शोभायात्रा, भजन संध्या एवं महायज्ञ का लाभ लिया। इस दौरान बाल, युवा, वृद्ध, स्त्री

और पुरुष सभी ने मिशन, मंदिर व संत भगवंत प.पू. साहेबजी के प्रति अपनी सेवा-भावना अर्पण की...

पू. सतीशभाई चटवाणी साहेब ने अनुभव दर्शन में बताया–

...साहेबजी जैसे समर्थ गुरु के संकल्प से मंदिर निर्माण में मुश्किल से मुश्किल काम आसान हो गए और आध्यात्मिक अनुभूतियाँ भी हुई... मंदिर निर्माण हेतु फाईनन्स करने वाले ***बॉर्कलेज़ बैंक*** *ने पहली बार किसी हिन्दू मंदिर के लिए फाइनन्स दिया और यह कार्य करके उन्हें बेहद खुशी हुई...*

मुंबई की **पू. चारुबहन किल्लावाला** ने प्रार्थना की–

...ऐसे उत्सवों द्वारा हम में - हमारे विचारों में दिन-प्रतिदिन बदलाव आता जाता है... हम समझने लगे हैं कि पहली पंक्ति में बैठें या आख़िरी पंक्ति में बैठें, सुनाई तो एक जैसा ही देगा। पहले हम में इन सब बातों का अभाव था। हमें ऐसा होता था कि हमें पहली पंक्ति में क्यों नहीं बिठाया? हमें किसी ने पूछा नहीं वगैरह। पर, अब हमें यह सब महसूस नहीं होता... उत्सवों की हम राह देखते हैं कि कब सब भक्तों को मिलें और आनंद करें...

पू. बारेन्द्रभाई ने **'रसघन मूर्ति'** – प.पू. साहेबजी की लाक्षणिक मूर्तियों का एलबम प्रकाशित करके भक्ति अदा की। तो, दूसरी ओर – **प्रो. चंद्रकांतभाई** ने प.पू. साहेबजी के जीवन पर आधारित **'साहेब सर्वत्र'** पुस्तक की अनुपम भेंट दी।

ऐसे उत्सव या महोत्सव जीव की प्रगति के साधन हैं। अतः, मंदिर महोत्सव की सभाओं के माध्यम से गुणातीत स्वरूपों और अपनेपन की भावना से आए बड़े संतों के आशीर्वाद प्राप्त करके सभी धन्य हुए... जैसे कि–

प.पू. अध्यात्मानंदस्वामिजी ने प.पू. साहेबजी के हृदयस्पर्शी प्रसंगों का वर्णन करते हुए आशीर्वाद दिया–

...'साहेब सर्वत्र' पुस्तक, पुस्तक नहीं, अनुपम मिशन का दस्तावेज है... साहेब को खड़खड़ाहट हँसना आता है और रोते हुए लोगों के चेहरे पर एक आनंद-निर्दोष हास्य देना आता है...

...रामकृष्ण परमहंस ने कहा है कि साधु को दिन में देखो और रात को भी देखो। मैंने साहेब दादा को दिन में भी देखा और रात को भी देखा... एक दिन रात को साढ़े दस बजे उन्होंने सतीशभाई से कहा– चलो, हम सबके ठहरने के स्थान पर जाएँ। साथ में आइसक्रीम लेकर जाएँ और सबको खिला कर आएँ व देख आएँ कि सब व्यवस्थित है या नहीं। मेरी व्यवस्था हुई या नहीं उसकी उन्हें चिंता नहीं, पर इन लोगों को क्या चाहिए या कोई तकलीफ तो नहीं... साहेब का अपना व्यक्तित्व है ही नहीं, हम सबका सुख ही उनका सुख है... किसी का भी दुःख, वो उनका दुःख...

प.पू. भरतभाई ने कहा–

...साहेब का जब स्वर्ण महोत्सव मनाया गया, तब हरिमंदिर की प्रतिष्ठा हुई थी। अब जब साहेब का अमृतपर्व मनाया जा रहा है, तब इस भव्य शिखरबद्ध मंदिर की प्रतिष्ठा हो रही है... लंदन मंडल की आध्यात्मिक प्रगति सभी प्रकार से दर्शन कराती है कि उन्होंने साहेब का और संतों का कैसा सेवन किया है... बड़े-बड़े महोत्सव मनाना अच्छी बात है, लेकिन बड़े से बड़ा महोत्सव वही है कि हमारे जीवन में परिवर्तन हो और संत भगवंत

साहेब, संतों और गुणातीत स्वरूप यही कार्य कर रहे हैं... कोई भी मंदिर बनता है, उसमें तीन चीज़ों का सहज दर्शन होता है –

- *एक – भगवान के भक्तों की सेवा-भावना,*
- *दूसरा – भक्तों का भजन*

  और
- *तीसरा – भगवान का कार्य भगवान स्वयं करते हैं – असंभव कार्य संभव करते हैं...*

  गुरु के संपर्क में आएँ, तो गुरु हमें तीन चीज़ें देते हैं –
- *हमें दृष्टि देते हैं कि हमें क्या देखना है, किस प्रकार का विज़न रखना है।*
- *हमें धीरज रखना सिखाते हैं।*
- *हमें हिम्मत देते हैं, निष्ठा दृढ़ कराते हैं...*

प.पू. दीदी ने आशिष याचना करते हुए कहा –

सबसे पहले काकाजी, पप्पाजी और सोनाबा को करोड़ों वंदन, जिन्होंने बहनों के लिए खूब अपमान-गालियाँ सह कर, ऐसा रास्ता हमारे लिए बना दिया। स्त्रीजाति को जो सम्मान दिलाया, उसका ऋण स्वप्न अवस्था में भी न भूलें...

ये उत्सव इसीलिए होते हैं कि हम आपस में नज़दीक आएँ, एक-दूसरे का माहात्म्य समझें और आनंद करें। ये स्वरूप आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक – हर प्रकार से हमारी परवरिश कर रहे हैं...

...एक बार साहेब को कहीं से पता चला था कि मुझे कमरदर्द की तकलीफ है, तो उन्होंने मेरे लिए लंदन से एक कमरबेल्ट भेजा था। ऐसी चिंता कौन करेगा?

ऐसे ही दिल्ली में हमारा आश्रम बनने से पहले वहाँ जाती सड़क पर गुरुजी ने नीम के पौधे इस भावना से लगवा दिए कि वहाँ रहने जाने के बाद बहनों को जब मंदिर आना-जाना हो तो धूप न लगे। जो हमारी स्थूल देह की इतनी चिंता करते हैं, वे हमारे जन्म-मरण के रोग की कितनी चिंता करते होंगे कि वह टल जाए... स्वरूपों का एक ही उद्यम है कि जो स्वभाव हमें जन्मों से परेशान कर रहे हैं, उन्हें छोड़ कर भगवान में रहते हो जाएँ... ***सब कुछ हमें पॉज़ीटिव मिला हुआ है और ऐसे में हम अपनी पूर्णाहुति न करा पाएँ, तो हम भगवान के गुनाहगार कहे जाएँगे...*** *हमारा स्त्री का देह है; स्त्री यानि प्रदर्शन किए बिना रह नहीं पाए... साहेब आप सब दयालु स्वरूप हमें मिले हैं, तो अब स्त्री के भाव से हम ऊपर उठें...*

वशीभाई से *औरंगाबाद के भक्त ने* ***पूछा था*** *कि* ***हम आपको क्या भेंट दें?*** *तब वशीभाई ने कहा था कि* ***बस, आप सब भगवान में रहने वाले हो जाओ।*** *सभी स्वरूपों की बातों में यही बात आती है। मतलब, यही चने की दाल और रोटी जब खाएँगे तब भूख जाएगी। सभी की बातों से यह निचोड़ निकलता है कि*

- *सबसे पहले हमारी युगल उपासना दृढ़ हो,*
- *हम रेग्युलर भजन करें,*

✻ भक्तों की खटपट (अभाव-अवगुण की बातें) न करें,

✻ मिलजुल कर, एक होकर कार्य करें।

प.पू. दिनकरभाई ने आशिष दी –

भगवान में रहने वाले स्वरूपों में कैसी शक्ति होती है, इसी का यहाँ दर्शन हो रहा है... काकाजी ने सोचा था कि अब ज़माना बदल रहा है और स्त्री के लिए भी ऐसी कोई जगह होनी चाहिए। उन्होंने स्त्री के सम्मान और महिमा की समझ दी। और... आज भगवाधारी बहनें, जिन्होंने भगवा वस्त्र ही नहीं धारण करे पर हृदय भगवा है, ऐसी बहनों का दर्शन हो रहा है। ***काकाजी कैसे विज़नरी थे! उनके विज़न के कारण आज सब है...*** *साहेब दादा भव्य स्वरूप हैं... जैसे धूल में से निकले गन्ने के द्वारा मिठास उत्पन्न होती है, उसी प्रकार यदि हमें साहेब दादा नहीं मिले होते, तो हम धूल जैसे होते। साहेब छोटे से छोटे बच्चे के जीवन में प्रायॉरिटी पर हैं। वे मानव बनाते हैं, देव बनाते हैं, महामानव बनाते हैं। मेरी एक प्रार्थना है – साहेब दादा, आप तो योगीबापा और काकाजी के खूब लाड़ले हो। योगीबापा ने काकाजी और आपका हाथ मिला कर यही आशीर्वाद दिया है कि हम सबको आप संभालना। हमारी कोई छोटी-बड़ी भूल होती हो, तो माफ़ करना... हिमंतस्वामी यहाँ एकदम स्थिर महंत हैं...*

प.पू. शांतिभाई साहेब ने मंदिर स्थापना का महत्त्व बताते हुए कहा–

...मन, बुद्धि, अहं का समर्पण करके, अपनी आत्मा को शुद्ध करें और हृदय में अखंड प्रभु को धारकर अपना जीवन धन्य बनाएँ, इस हेतु साहेब दादा ने उपासना के मंदिर कृपा करके दिए हैं... साहेब दादा को आत्मा में सदैव रखें, चौबीस घंटे उनका अभिप्राय-अनुवृत्ति हम सबका जीवन बने... उनके अंतर की रुचि समझ आए और उसके मुताबिक सभी कार्य कर सकें...

पू. गोस्वामी 108 व्रजराजकुमारजी महाराज ने आशीर्वाद रूप वाणी में एक बहुत अच्छी बात की –

...एक बच्चे को कोई मेहमान यदि दो रुपये की चॉकलेट देता है, तो माँ बच्चे को धीरे से कहती है कि 'थँक यू' बोल। यदि दो रुपये की चॉकलेट के लिए 'थँक यू' बोला जाता हो, तो विचार करो कि इतना कीमती जीवन भगवान ने हमें भेंट में दिया और शरीर में भेंट स्वरूप किडनी, लिवर, हार्ट, इंद्रियाँ इत्यादि दी हैं। जब ये पार्ट्स बिगड़ते हैं तो उन्हें रिपेयर करने का चार्ज कितना बड़ा आता है और यदि बदलना पड़े तो कितना बड़ा चार्ज देना पड़ता है। यह सब भगवान ने हमें भेंट में प्रदान किया है। तो जो जीवन भगवान ने हमें भेंट में दिया, उसके लिए भगवान को निश्चित आभार व्यक्त करना हमारा कर्तव्य है... इसलिए हम भक्ति करते हैं...

मूर्तिप्रतिष्ठा महोत्सव की खुशी एवं मुक्तों पर प्रसन्नता उड़ेलते हुए, तकरीबन हर एक सत्र में **संत भगवंत प.पू. साहेबजी** की कृपा बरसी... यज्ञ की फलश्रुति मिली –

✻ *...प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामिजी, काकाजी, पप्पाजी जैसे गुणातीत स्वरूपों ने शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज जैसे दिव्य स्वरूपों से जोड़ कर, उनके माहात्म्य में डुबो कर हमें जो तैयार किया, उसका यह परिणाम है... उनकी यही भावना-हेतु था कि उपासना के लिए सनातन स्थान होना चाहिए... मंदिर और उसमें स्थापित मूर्तियाँ सनातन हैं और वो हज़ारों लोगों के लिए अच्छा जीवन जीने*

की प्रेरणा का स्रोत हैं। ***मंदिर का प्राण संत है।*** *संतों के प्रेम और लगाव वश छोटे बालक से लेकर युवक जो काम कर रहे हैं, उसका हमें दर्शन होता है... मंदिर में जाने पर या ऐसे माहौल में बैठने पर हमारे भीतर का दैवीभाव अधिक से अधिक जाग्रत होता है। तब नकारात्मक-आसुरीभाव अपने आप कम होता जाता है। इस हेतु मंदिर-सत्संग की जरूरत है, साधु-संतों के सान्निध्य की जरूरत है...*

❊ *...भगवान की प्रसन्नता प्राप्त करने का रहस्य-प्रींसीपल* ***योगीबापा ने*** *अपने असाधारण लगाव और वर्तन से सिखाया। फलस्वरूप* ***हमारे किसी भी केन्द्र में भक्त किसी की भी टीका-चर्चा करते नहीं। महिमा की बातें ही सुनते हैं और करते हैं।*** *छोटे-बड़े सभी मिलजुल कर सेवा करते हैं, जिससे भगवान की प्रसन्नता बरसती है और भगवान की प्रसन्नता जहाँ बरसे, वहाँ शांति, आनंद और सुख ही होगा...* ***शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज के संकल्प का यह परिणाम है। काकाजी, पप्पाजी, बा, प्रत्यक्ष स्वरूपों की तपस्या का फल है...***

❊ *...अद्‌भुत माहौल में यज्ञ हुआ... जब नया राजा गद्दी पर बैठे और उसका राज्याभिषेक हो, तो राजा सबसे पहला काम यह करता है कि जेल में से सभी कैदियों को छोड़ देता है। गुनाह माफ़ करके, सभी जेलों को दूध से धुलवा कर, प्रजा को खूब सुखी रखने का संकल्प करता है। मूर्तियों की प्रतिष्ठा होगी, प्रार्थना करें कि हमने आपको भुला कर कोई भी कार्य किए हों, तो हमारा भूतकाल मिटा कर हमें माफ़ करना। हमारे सारे प्रारब्ध धुल जाएँ... संकल्प करें कि प्रभु को निरंतर याद करेंगे और उनके कार्य में जुड़ेंगे... किसी के भी अभाव-**अवगुण की बातों** में नहीं पड़ें; यदि यह* ***करेंगे, तो भगवान से संबंध टूट जाएगा। वर्ना वे तो भक्त की रक्षा में हमेशा बैठे ही हैं...***

❊ *...हमारी अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना का रहस्य है कि भगवान को कर्ता-हर्ता मानें। वो भगवान गुणातीत साधु द्वारा साकार और प्रगट हैं। ऐसे गुणातीत साधु में जुड़ कर, दो हाथ जोड़ कर, उनकी आज्ञा पालें, तभी मानव भीतर से बदलता है। वर्ना* ***कितनी तपस्या, साधन करो, सात्त्विकभाव तक पहुँच जाओगे, लेकिन आंतरिक रूपांतर करने के लिए ऐसे गुणातीत साधु में जुड़ जाएँ और दो हाथ जोड़ कर उनकी आज्ञा पालें और भक्तों में निर्दोषभाव व सुहृद्‌भाव रखें, तो आंतरिक हठ, मान, ईर्ष्या, कामना के दोष पिघल जाएँगे, तुम्हें ख्याल भी नहीं पड़ेगा!***

...आज ***श्रावण शुक्ल-2****, जिनके सान्निध्य-प्रेम से हमारा संसार का रस छूट गया, ऐसी* ***सोनाबा का आज जन्मदिन है...*** *जब तारीख पक्की करी, तो यह सोच कर नहीं की थी। पर, भगवान सदैव हमारी रक्षा में रहते हैं। मूर्तिप्रतिष्ठा की तारीख ही बा के जन्मदिन पर पक्की हुई। अनुपम मिशन की स्थापना में, अनुपम मिशन के संतों के आध्यात्मिक उत्थान में बा ने जो भूमिका अदा की है और आज* ***उनके प्राकट्‌य पर्व पर मूर्तिप्रतिष्ठा हुई, उसका विशेष आनंद है...***

महोत्सव की पूर्णाहुति सभा के अंत में **प.पू. स्वामिजी** ने आशिष वर्षा की–

...साहेब में एक गुण सहज है कि सभी के साथ संप, सुहृद्‌भाव, सरलता से ऐसा हेत कर लेते हैं, जिससे हमें खूब बल मिलता है। ***पू. अश्विनभाई, शांतिभाई, हिंमतस्वामी सच्चे साधु हैं।*** *ऐसे साधु के समागम में*

हमें रहने को मिला... साहेब के संतों को कोई अपेक्षा नहीं। इनके साथ दोस्ती बढ़ाते रहना, आख़िरी जन्म हो जाएगा...

महोत्सव के समापन में अनुपम मिशन–यू.के. के प्रमुख **पू. वीनुभाई नकारजा** ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सायं शिकागो, पॅरिस, पवई और दिल्ली की बहनें, लंदन–गुणातीत ज्योत के दर्शनार्थ गए। वहाँ भक्तिभरे हृदय से बनाया प्रसाद लिया।

17 अगस्त की सुबह **पू. हिंमतस्वामिजी** के **60वें प्राकट्य दिन** की सभा में, पू. हिंमतस्वामिजी के साथी-सेवक मुक्तों ने हार, स्मृति भेंट इत्यादि अर्पण की। उनकी सरलता, साधुता का दर्शन कराया। **सभा का माहौल ऐसा था कि मानो प.पू. साहेबजी के रूप में परिवार के मुखिया के सम्मुख सब ने दिल खोल कर अपने मन की बातें की, कोई औपचारिकता नहीं थी।** यूँ, मंदिर महोत्सव की दिव्य स्मृतियों को संजो कर सभी ने विदाई ली।

18 अगस्त को **पू. किशोरभाई मास्टर्स** एवं **पू. सुधा बहन** के साथ बहनें लॅस्टर गईं। ब्रह्मस्वरूप काकाजी से घनिष्ठता से जुड़े मुक्तों की सेवा-भावना का दर्शन करके लंदन लौटीं। **20 अगस्त** को **पॅरिस** के लिए रवाना हुए। **पू. प्रवीणभाई लाड** एवं मुक्तों के साथ स्टेशन से निकल कर **प.भ. भरतभाई मिस्त्री** के घर पहुँचीं। पॅरिस ट्रिप में प.पू. दीदी एवं सभी इन्हीं के घर ठहरे। प.पू. दीदी पहली बार पॅरिस गई थीं। सो, प.पू. काकाजी के प्रति अंतर से जुड़े सभी भक्तों की ख़ुशी का कोई ठिकाना ही नहीं था। दूसरी ओर–भक्तिभरे इस समाज को देख कर **प.पू. दीदी** के मुख से भी उद्‌गार सहज ही फिसल गए–

सच, यदि मैं यहाँ नहीं आई होती, तो बहुत कुछ मिस कर देती। इन्हें कुटुंबभाव से जीता देख कर, काकाजी कितने राज़ी होते होंगे...

तीन दिन धुन-भजन के साथ प.पू. दीदी ने पॅरिस के मुक्तों को खूब लाभ दिया। प.पू. काकाजी की प्रसादी के स्थलों का दर्शन किया। हर एक स्थल पर पू. प्रवीणभाई ने प.पू. काकाजी की दिव्य स्मृतियों का माहात्म्य बताया।

प.पू. गुरुजी हमेशा जो भावना रखते हैं कि **अपने घरों में मंदिर प्रॉमिनन्ट जगह पर होने चाहिए**, पॅरिस में हर मुक्त के घर में दाखिल होते ही हॉल में मंदिर का दर्शन होता और हर एक के यहाँ प.पू. काकाजी की बड़ी मूर्ति देख कर अंतर को ठंडक मिलती। सभी के अपनेपन के प्रति बहनों का हृदय नतमस्तक हो गया। **23 अगस्त** की सायं पॅरिस के प्रेमी भक्तों से विदा लेकर बहनें **24 अगस्त** की सुबह दिल्ली मंदिर पहुँचीं।

और... इस 'भक्ति यात्रा' में **पू. किशोरभाई मास्टर्स की अद्‌भुत सेवा–भावना, अपनेपन और सर्वदेशी समझ के लिए तो शब्द ही नहीं हैं।** लंदन ट्रिप के दौरान वे अपनी गाड़ी के साथ बहनों की ड्राईविंग की सेवा पर लगातार रहे। फिर पॅरिस भी साथ में आए। यूँ, अपनी इस सेवा से उन्होंने प.पू. गुरुजी को एक निश्चिंतता प्रदान की।

❋ ❋ ❋

अलविदा – पू. योगिनी बहन!

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की निश्रा में, 1978 से पवई में रहते हुए बहनों ने भगवान भजने की शुरुआत की थी। ब्रह्मस्वरूप काकाजी की आज्ञा से साधक एवं सत्संगी बहनों को **पू. योगिनी बहन** का नेतृत्व मिला। वंशानुगत बीमारी के कारण पिछले कई वर्षों से हृदय के वाल्व की तकलीफ से वे नादुरस्त थीं। उस हेतु ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के लाड़ले प.भ. डॉ. महेन्द्रभाई मर्चंट की निगरानी में उनके दो बड़े ऑपरेशन हुए।

डॉ. महेन्द्रभाई के कहे अनुसार – *सिर से नख तक उन्हें पीड़ा थी, लेकिन काकाजी महाराज की मरजी जान कर वे देहातीत वर्तीं। उन्होंने कभी भी प्रभु से यह शिकायत नहीं की कि मुझे ही क्यों बीमारी दी? काकाजी की स्मृति करके पहले भजन करतीं, फिर किसी भी डॉक्टर को दिखातीं - करतीं और स्मृति करके दवाई लेतीं।*

परंतु, अंत में **पू. योगिनी बहन** ने किसी भी उपचार के लिए मना कर दिया था और आग्रहपूर्वक कहा– ***'महाराज और काकाजी को उनका कार्य करने दो...'***

और... जीवन के अंतिम श्वास तक संबंध वाली बहनों, भाभियों एवं युवतियों के हर प्रकार के उत्थान हेतु भजन-प्रार्थना करते हुए, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की कृपापात्र बनी **63 वर्षीय पू. योगिनी बहन** ने **17 सितंबर 2015 – गणेशचतुर्थी** के मंगलकारी दिन-सायं पौने चार बजे प्रसन्नचित्त से अक्षरधामगमन किया। अगले दिन **18 सितंबर** की सुबह 10 बजे उनकी अंत्येष्टि निमित्त विद्यानगर से प.पू. ज्योति बहन, पू. नीलम बहन, हरिधाम से प.पू. सर्वेश्वर बहन, प.पू. सुमन बहन, दिल्ली से प.पू. दीदी, पू. स्वाति दीदी, पू. नित्या दीदी, गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों से संत बहनें व भाभियाँ एवं करीब 300 से अधिक मुक्त भावांजलि अर्पण करने के लिए आए। उनके पार्थिव शरीर का पूजन-अर्चन, गुणातीत समाज का ध्वज-अर्पण विधि इत्यादि के बाद, पुष्पों से सुशोभित पालकी में पधरा कर, समाधि स्थान की प्रदक्षिणा कराई। तत्पश्चात् पुष्पांजलि अर्पण करके 11 बजे विक्रोली के श्मशानगृह में 'स्वामिनारायण' महामंत्र के उच्चारण के साथ अग्निसंस्कार किया गया।

19 सितंबर 2015 – पू. योगिनी बहन की श्रद्धांजली सभा में **प.पू. ज्योति बहन** के अंतर से फिसले निम्न उद्गार पू. योगिनी बहन की अद्भुत भक्ति का परिचय देते हैं–

ऐसे स्वरूपों के जाने के बाद उनकी क़ीमत समझ आती है... वे अपनी सुवास फैला कर जाते हैं...

प्रार्थना सभा में गायकवृंद ने पू. योगिनी बहन के पसंदीदा भजन गाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। प.पू. ज्योति बहन की निश्रा में संत भाइयों व बहनों ने उनका माहात्म्य, उनके प्रति अपनी हृदय भावना एवं उनके साथ के प्रसंग-अनुभूति व्यक्त की। पू. योगिनी बहन की स्मृति में 20 से 28 सितंबर तक **'स्वामी की बातों'** एवं **'सत्संग की नारी रत्नों'** पुस्तक की पारायण हुई। 29 सितंबर को उनकी त्रयोदशी निमित्त महापूजा में, गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों से पधारे मुक्तों ने उनकी स्मृति करके महाप्रसाद लिया।

1986 में ब्रह्मस्वरूप काकाजी के स्वधामगमन के पश्चात् पू. योगिनी बहन ने अपने अंत समय तक सभी बहनों और अनेक परिवारों को खूब संभाला। इससे भी अधिक, ब्रह्मस्वरूप काकाजी के माहात्म्य स्वरूपों प.पू. दिनकरभाई, प.पू. बापु, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं सभी संत भाइयों का 'काकाजी' के भाव से सेवन कर लेने की प्रेरणा दी-माहात्म्य भरा।

प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी के संबंध से गुणातीत समाज की सभी बहनें–चाहे वे विद्यानगर की हों, हरिधाम की हों, पवई की हों–उन सभी के प्रति प.पू. गुरुजी का विशिष्ट अपनत्व रहा है। इसी प्रकार से पू. योगिनी बहन को अकसर याद करते हुए प.पू. गुरुजी भी उनकी बीमारी की चिंता करते थे।

दूसरी ओर– प.पू. योगिनी बहन का भी प.पू. गुरुजी के प्रति अनोखा लगाव था–

2010 मार्च में प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव निमित्त मुबंई मंडल दिल्ली मंदिर आया था। 18 मार्च को प.पू. भरतभाई, पू. वशीभाई एवं सभी मुंबई के लिए लौट रहे थे। पू. योगिनी बहन भी साथ में थीं। जब सभी स्टेशन जाने के लिए मंदिर से निकलने लगे, तो प.पू. गुरुजी ने 'स्ट्रेईट खड़े रह कर' भाइयों को दो बार सॅल्यूट किया। तब पू. योगिनी बहन ने मंदिर से गए मुक्त को रास्ते में बताया–

काकाजी ने जब लकड़ी लेनी शुरु ही की थी, तो मैंने उनसे कहा था कि आप ऐसे अच्छे नहीं लगते। फिर काकाजी ने दोबारा कभी छड़ी नहीं ली। मतलब वो जॅस्चर ही खत्म कर दिया। ऐसे ही मैंने गुरुजी को कहलवाया था कि सेवक का हाथ पकड़ कर चलते हुए आप मुझे अच्छे नहीं लगते। तब, गुरुजी ने काकाजी की स्मृति कराते हुए कहलवाया था –

तेरे सामने हमेशा स्ट्रेईट ही रहूँगा। इसलिए अभी ऐसे सॅल्यूट मारते हुए वे स्ट्रेईट खड़े थे।

वाकई, ब्रह्मस्वरूप काकाजी के 'कुटुंबभाव' के सिद्धांत को पू. योगिनी बहन ने जीवन का सार माना। 2011 के अक्तुबर महीने में पू. राकेशभाई शाह के साथ पू. नित्या एवं पू. बंसरी 'अर्चिमार्ग की ओर' प्ले के संवादों की रॅकार्डिंग हेतु मुंबई गए थे। तब मुश्किल से पच्चीस दिन पहले ही पू. योगिनी बहन के हार्ट की सर्जरी हुई थी। रॅकार्डिंग के बाद सब पवई मंदिर पहुँचे, तो देखा कि रात के साढ़े ग्यारह बजे पू. योगिनी बहन मानो अपने सगे की ही राह देख रही थीं! इससे भी अधिक, अगले

दिन सुबह छः बजे जब ये मुक्त सुरत जाने के लिए निकल रहे थे, तब भी पू. योगिनी बहन दर्शन देने के लिए जगी हुई थीं!! उनके चेहरे से बिल्कुल एहसास नहीं होता था कि इतनी बड़ी सर्जरी हुई है। पारिवारिक आत्मीयता से सभर उनका ऐसा आदर्श जीवन था।

इन सब गुणों से परे, अपने नाम के अनुरूप, उनकी एक 'जाग्रत साधक' की दृष्टि थी। यही कारण था कि समय-समय पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा उन्हें जो सूझ-टकोर मिली, वह उन्होंने हमेशा दिल में संजोए रखी। **जेवा में निरख्या रे-1** में ब्रह्मस्वरूप काकाजी की स्मृति में उन्होंने जो लेख लिखा है, उसमें लिखे सभी प्रसंग खूब मननीय हैं। निम्न प्रसंग की सूझ को हम अपने जीवन में लागू करके, पू. योगिनी बहन की प्रीति, भक्ति और सत्पुरुष को निहारने की अनोखी दृष्टि के लिए नतमस्तक होकर भावांजलि अर्पण करें...

1973 की 30 मार्च के सुबह प.पू. काकाजी के पास गई थी। उस दिन मेरी बी.ए. फाइनल की परीक्षा शुरू होने वाली थी और उसी दिन मेरा जन्मदिन था। सो, काकाजी का पूजन करने के लिए ताड़देव गई थी। काकाजी ने कहा– 'पहले ठाकुरजी का पूजन करो।' ठाकुरजी का पूजन करने के बाद मैंने काकाजी का पूजन किया। ठाकुरजी को लगा कर काकाजी को हार पहनाया और प्रसाद धराया। काकाजी ने मुझे प्रसाद देते हुए कहा–

प्रसादी की एक बात सुन कर परीक्षा देने के लिए जाओ। तुम और दिव्या बहन ऐसी एकता करो कि दिव्या बहन से यदि दूध गिर जाए, तो कहना कि मुझसे गिर गया और तुझसे यदि कप टूट जाए तो दिव्या बहन कहे कि मुझसे टूट गया। यूँ ***'एकता'*** *यानि क्या, वह अत्यंत सादी भाषा में समझा दिया। फिर बोले – 'तू परीक्षा देने के लिए जा रही है और उसी विषय में मनन-चिंतन करे तो वह* ***'स्वधर्म'*** *कहा जाएगा। लेकिन पेपर लिख कर आने के बाद भी यदि उसी का मनन-चिंतन रहे, तो वह मूर्ति भूलना कहा जाएगा। एकांतिक धर्म सिद्ध करते हुए, यदि* ***'मूर्ति भूले'*** *तो वह* ***'महापाप'*** *है।' उसके बाद, मैंने जिस प्रकार पूजा की, हार पहनाया, पैर छुए और प्रसाद धरा, उसका अपने स्वमुख से वर्णन करते हुए प.पू. काकाजी ने कहा–यही स्मृति किया करना।*

यूँ सहजता से ***'स्मृति'*** *किस प्रकार करनी,* ***'एकता'*** *से कैसे जीना,* ***'स्वधर्म'*** *क्या होता है या महापाप क्या – यह सब समझा कर मूर्ति में रहने का मार्ग बताने की परम कृपा की।*

उन्होंने शारीरिक तौर पर कई तकलीफें सहीं; पर, 'देह तो देह का कार्य करे' – यूँ दृढ़ता से मान कर, अंतर केवल प्रभु, संत एवं सत्संगी के प्रति अर्पण करके, पू. योगिनी बहन सभी के हृदय में चिरंजीव बनी हैं। ऐसी पू. योगिनी बहन के भजन, सेवा, आत्मबुद्धि व प्रीति के प्रति हृदय से कोटि-कोटि वंदन...

❋ ❋ ❋

अन्नकूटोत्सव

दिनाँक 12 नवंबर 2015, गुरुवार की सुबह
गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन – 9:30 से 11:30
अन्नकूट आरती – 11:45 बजे
सपरिवार ईष्ट मित्रमंडल सहित पधारने आपको हार्दिक निमंत्रण है।

स्थान : **श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर**
'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग,
अशोकविहार -III , दिल्ली - 110 052

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 13.10.'15, मंगलवार – नवरात्रे प्रारंभ

(2) दि. 22.10.'15, गुरुवार – **दशहरा, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन**

(3) दि. 24.10.'15, शनिवार – एकादशी, व्रत

(4) दि. 26.10.'15, सोमवार – शरदपूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्य दिन
प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन
प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि

(5) दि. 29.10.'15, गुरुवार – ब्रह्मस्वरूप जागास्वामिजी की जन्मजयंती

(6) दि. 7.11.'15, शनिवार – एकादशी, व्रत एवं वाघबारस

(7) दि. 9.11.'15, सोमवार – धनतेरस (अशोकविहार मंदिर में 'धनपूजा' – सायं 5:30 से 7:00)

(8) दि. 10.11.'15, मंगलवार – अक्षर चौदस

(9) दि. 11.11.'15, बुधवार – दिवाली (अशोकविहार मंदिर में 'शारदा पूजन' – सायं 4:30 से 5:55)

(10) दि. 12.11.'15, गुरुवार – अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष–विक्रम संवत 2072 प्रारंभ
दिल्ली गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन – सुबह 9:30 से 11:30
अन्नकूट आरती – सुबह 11:45 बजे

(11) दि. 13.11.'15, शुक्रवार – **भैयादूज**

(12) दि. 16.11.'15, सोमवार – **लाभपंचमी**

(13) दि. 22.11.'15, रविवार – प्रबोधिनी एकादशी–व्रत
तुलसी विवाह-प्रारंभ
ठाकुरजी के समक्ष सब्जी की हाट लगेगी।

(14) दि. 25.11.'15, बुधवार – **देवदिवाली**, तुलसी विवाह-समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती

▲(प.भ. मिहिरभाई के परिवार के साथ)

▲(संत भगवंत प.पू. साहेबजी के पास)

'मंदिर महोत्सव'
अनुपम मिशन – यू.के.
2015

▲(प.पू. शांतिदादा के पास)

▼(प.पू. अश्विनदादा के पास)

'भक्ति यात्रा'
की
दिव्य स्मृतियाँ

▼ (पू. हिम्मतस्वामी को भेंट अर्पण)

▼ (बहनों द्वारा पू. हिम्मतस्वामी को हार अर्पण)

प.पू. दीदी व बहनें – पॅरिस में मुक्तों के साथ...

सूचना

* सभी मुक्तों से विनती है कि
भले ही आज तक आपने पत्रिका हेतु कुछ भी चंदा न दिया हो;
परंतु, *एक ही बारी* ***कम से कम ₹ 551*** *भेज कर*
अब तक का *पिछला सारा बकाया आप पूरा कर दें।*
'भगवत् कृपा' का वार्षिक चंदा **भारत** के लिए **₹ 111** एवं
विदेश के लिए **₹ 555** निर्धारित किया गया है।
भविष्य में यह राशि भी वार्षिक चंदे के रूप में आप नियमित दे दिया करें।

* बदलते युग की नई तकनीकों से समय और पैसों की काफ़ी बचत की जा सकती है।
आप हमें ***info@ydsd.org*** *पर अपना* ***e-mail ID*** *भेज दें।*
जिससे हम आपको **e-newsletter – 'भगवत् कृपा'**
एवं
e-card – 'प्रासंगिक कार्ड' वगैरह भेज दिया करेंगे,
ताकि उसका प्रिन्ट निकाल कर या अपने मोबाईल पर आप पढ़ सकें।
इसके अतिरिक्त आप हमारी **www.ydsd.org** **वेबसाईट** से
'भगवत् कृपा' या **'प्रासंगिक कार्ड'** इत्यादि डाउनलोड कर सकते हैं।
यूं पैसे एवं समय की बचत करते हुए श्रीठाकुरजी की अच्छी सेवा हो जाएगी।

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052